गन्ने के प्लासी क्षिद्रक कीट का एकीकृत प्रबंधन

कृषि कुंभ (दिसंबर, 2022),
खण्ड 02 भाग 07, पृष्ठ संख्या 34–35

गन्ने के प्लासी क्षिद्रक कीट का एकीकृत प्रबंधन

प्रिया सिंह[1], इन्क्रेश कुमार वर्मा[1] एवं मो. मिन्नतुल्लाह[2]

[1]पादप रोग एवं सूत्रकृमि विभाग, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार

[2]गन्ना अनुसन्धान संस्थान, डॉ. राजेंद्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर, बिहार उत्तर, भारत।

ईमेल – singhikv95@gmail.com

परिचय

गन्ना एक महत्वपूर्ण खाद्य सह नकदी फसल है जो पूरे भारत में बड़े पैमाने पर उगाई जाती है। गन्ने के फसल की अवधि (लगभग 10 से 12 माह) अधिक होने के कारण, इस पर कीटों और बीमारियों का प्रकोप ज्यादा होता है जिससे पैदावार कम होता है। गन्ने को आक्रान्त करने वाली लगभग 125 कीट प्रजातियाँ हैं। सभी कीटों में, गन्ने का प्लासी क्षिद्रक कीट किसानों के लिए बहुत ही गंभीर समस्या है, जो बुवाई से लेकर कटाई तक देखा जाता है। इसकी वजह से गन्ने की उपज में 8.2 से 12.6 प्रतिशत एवं चीनी में 1. 25 से 7.85 प्रतिशत की हानि होती है। खेत में जल–जमाव की स्थिति एवं अधिक तापमान से इस कीट की आक्रामकता बढती है।

कीट की विभिन्न अवस्थायें

- इस कीट की चार अवस्थायें जैसे अण्डा, पिल्लू, प्यूपा एवं वयस्क पाये जाते हैं।
- अंडे मटमैले सफेद रंग, चपटे तथा समूह में दिये जाते हैं।
- पिल्लू के ऊपर चार गुलाबी रंग की धारियाँ होती है।
- प्यूपा बादामी रंग का होता है तथा नर एवं मादा प्यूपा के आकर में भी अंतर होता है।
- प्रौढ़ नर कीट, मादा कीट की अपेक्षा आकार में छोटा होता है । इनके पंख बादामी रंग के होते हैं।

आक्रमण के लक्षण

कीटों के आक्रमण के आमतौर पर दो चरण होते हैं – प्राथमिक और द्वितीयक। प्राथमिक आक्रमण का चरण बुवाई से लगभग 60 दिनों के उपरांत शुरू होता है तथा कीटों का आक्रांत पौधों से स्वस्थ पौधों की तरफ पलायन के बाद द्वितीयक आक्रमण चरण देखा जाता है।

प्राथमिक आक्रमण के लक्षण

1. नवजात पिल्लुओं द्वारा गन्ने के कोमल तनों में छिद्र बनाया जाता है जिससे वह गन्ने के अन्दर घुसते हैं और आतंरिक भाग को खाकर खोखला कर देते हैं।
2. आक्रांत गन्ने को चीरने पर उसमे अनेक पिल्लू दिखाई देते हैं।
3. आक्रांत गन्ना तनों के छिद्रों से लाल गीला कीटमल बाहर निकलता है।
4. ग्रसित गन्ने के अगोले सूख जाते हैं और हवा से आसानी से टूटकर निचे गिर जाते हैं।

द्वितीयक आक्रमण के लक्षण

1. विकसित पिल्लुओं द्वारा स्वस्थ विकसित गन्ने या पूर्व आक्रांत गन्ने के निचले स्वस्थ हिस्सों को दुबारा ग्रसित किया जाता है।
2. आक्रांत गन्ना तनों से लकड़ी के बुरादे जैसे कीटमल बाहर निकलता है।
3. इसमें आक्रांत गन्नों की ऊपरी पत्तियाँ नही सूखती हैं।

कीट का एकीकृत प्रबन्धन

1. खेत का निश्चित अन्तराल पर निरीक्षण करना चाहिए एवं ग्रसित गन्ने की गुल्लियों को नष्ट कर देना चाहिए।
2. नर प्रौढ़ कीट को आकर्षित करने के लिए प्रकाशप्रपंच लगाया जाना चाहिए।
3. जल निकासी का उचित प्रबंध करना चाहिए ताकि खेत में जल–जमाव की स्थिति पैदा नहीं हो सके।
4. दस दिनों के अंतराल पर ट्राइकोगामा किलोनिस का 50000 अण्डा प्रति हेक्टेयर, 3 से 5 बार आक्रांत फसल पर छोड़ना चाहिए।
5. 15 दिनों के अन्तराल पर एमिडाक्लोप्रीड 8 एस.एल. के 0.1 प्रतिशत (1 मि0ली0 दवा प्रति एक लीटर पानी) का 2 से 3 बार छिड़काव करना चाहिए।